Ratzel

"फ्रेडरिक रैटजेल"

जन्म 1844
मृत्यु-1904

रैटजेल का जन्म 1844 में जर्मनी में हुआ था। इनके पिता एक स्कूल के मैनेजर थे। परिवार में कुल चार सदस्य थे। रैटजेल ने सर्वप्रथम प्राणी विज्ञानी के रूप में हैडलबर्ग विश्वविद्यालय में अध्ययन किया। बाद में जेना (Jena) विश्वविद्यालय में चले गये।

31 वर्ष की आयु में रैटजेल म्यूनिख के एक स्कूल में अध्यापक हो गये तथा 1886 तक वहीं रहे। उन्होंने म्यूनिख के नृजाति संग्रहालय में मोरिस वेगनर के साथ कार्य किया। यहीं वे प्रजातियों के आव्रजन से प्रभावित हुये। इस विचार ने उनके भौगोलिक दर्शन को प्रभावित किया। 1886 में रिचथोफेन के बर्लिन आने के बाद रैटजेल लीपजिग आये। यहाँ

फिशर एवं हेटनर जैसे भूगोलविदों ने रेटजेल के निर्देशन में कार्य किया।

1878 में रेटजेल ने उत्तरी अमेरिका के भूगोल पर एक पुस्तक प्रकाशित की थी। उसके विख्यात ग्रन्थ 'एन्थ्रोपोज्योग्राफी' का प्रथम खण्ड 1882 में और द्वितीय खण्ड 1891 में प्रकाशित हुआ। यह एक प्रतिष्ठित शास्त्रीय ग्रन्थ है जिसके कारण रेटजेल को मानव भूगोल का जन्मदाता कहा जाता है।

प्रमुख पुस्तकें

(1) डार्विन के विकासवादी सिद्धान्त की समालोचना
(2) चीनी उपनिवास
(3) मानव भूगोल
(4) उत्तरी अमेरिका का भौतिक एवं सांस्कृतिक भूगोल
(5) राजनीतिक भूगोल
(6) जर्मनी का प्रादेशिक भूगोल

Scanned with OKEN Scanner

(7) संयुक्त राज्य का राजनीतिक भूगोल
(8) एक प्रकृतिविज्ञानी की यात्राएँ
(9) पृथ्वी और जीवन एक तुलनात्मक अध्ययन
(10) राज्य, व्यापार और युद्ध का भूगोल

रेटज़ेल की विचारधारा

रेटज़ेल विश्व के प्रथम पूर्ण मानव भूगोलवेत्ता थे। उन्होंने मानव भूगोल को एक विज्ञान के रूप में संस्थापित किया और अपने नवीन विचारों से उसे पोषित किया। रेटज़ेल की विचारधारा के प्रमुख पक्ष निम्नलिखित है :-

"नियतिवाद या पर्यावरण नियतिवाद"

रेटज़ेल मानव और पर्यावरण के पारस्परिक सम्बंधों में पर्यावरण के प्रभावों को अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने अपने मानव भूगोल के प्रथम खण्ड में डार्विन के विकासवाद की पुष्टि की थी और मत व्यक्त किया था कि भौगोलिक पर्यावरण के अनुसार ही मानव समाजों के

M	T	W	T	F	S	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

इतिहास का निर्माण होता है। इसीलिए रैटजेल को नियतिवाद का प्रतिपादक माना गया है।

रैटजेल ने मानव भूगोल के अन्तर्गत मानव जीव की व्याख्या पर्यावरण के संदर्भ में प्रस्तुत किया और विभिन्न प्रादेशिक कारणों द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि मानव के रहन-सहन, उसकी आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्रियाएं तथा संस्कृति आदि भौतिक पर्यावरण के अनुसार ही निर्धारित होती है।

पार्थिव एकता का सिद्धान्त

पार्थिव एकता या अंतर्सम्बन्धों के सिद्धान्त में रैटजेल की पूर्ण आस्था थी उन्होंने मानव भूगोल के विश्लेषण में पार्थिव एकता के सिद्धान्त को ही प्रमुखता प्रदान की थी। वे सम्पूर्ण विश्व को उसके व्यक्तिगत तत्वों के रूप में नहीं

Scanned with OKEN Scanner